14. यूरोपियों का आगमन

- भारत में यूरोपियों के आगमन के क्रम में सर्वप्रथम पुर्तगाली, तत्पश्चात क्रमशः डच, ब्रिटिश तथा सबसे अन्त में फ्रासीसी आये। इन यूरोपियों व्यापारिक कम्पनीयों के मूल नाम इस प्रकार है।

1. **पुर्तगाली** : एस्तार्दो द इंड़िया (1498 ई)।
2. **डच कम्पनी** : वेरिगदे ओस्त इंडिये कम्पनी (1602 ई.)।
3. **विट्रिश कम्पनी** : मर्चेन्ट आंफ एडवेचरर्स गर्वनर एण्ड कम्पनी आंफ मर्चेन्ट आंफ लंदन ट्रेडिग इन टू द ईस्ट इन्डीज (31 Dec 1600ई.)।
4. **फ्रासीसी कम्पनी** : कैम्पेग्ने डेस इंडेश ओरिएटल्स (1664 ई.)।

- नये मार्गों की खोज की दशा में सर्वप्रथम प्रयास पुर्तगाल के शासक डॉन हैनरी II ने शुरू किये (इसे हेनरी द निविगेटर के नाम से भी जाना जाता है।)
- जांन हैनरी ने सर्व प्रथम 1487 में ''बार्थो लोमियों डियोज'' को 1487 ई. में पूर्वी देशों के लिए नये मार्गों की खोज में भेजा। डियाज अफ्रीक महाद्वीप के दक्षिणतम विन्दु तक पहुंचा और उसने इस जगह को तूफानी अन्तरिम (Cape of Storm) बाद में डॉन हेनरी ने इस जगह को एक नया नाम दिया (cape of good hope) उत्तम आशा अन्तरिम।
- 1492 में स्पेन की महारानी ईशावेला ने कोलम्बस को पूर्वी देशों की खोज के लिए भेजा। भारत की खोज में भटक कर कोलम्बस 1494 में एक नयी दुनिया में जा पहुंचा उसने इस नये भू-भाग को एशिया महाद्वीप का हिस्सा वताया तथा यहां के निवासियों को इन्डियन कहा।
- 1499 ई. में इटली के एक व्यापारी अमेरिगो वेस्प्यूची ने बताया कि कोलम्बबस द्वारा खोजी गई यह नई दुनियां (एशिया महाद्वीप का हिस्सा नही हैं) अतः उसी के नाम पर इस महाद्वीप का नाम अमेरिका रख दिया।
- 1519 में सर्वप्रथम एक पुर्वगाली नाविक मैग्लेन ने सर्व प्रथम पूरी पृथ्वी की परिक्रमा की और बताया कि पृथ्वी गोल हैं।

पुर्तगालियों का आगमन : वास्कोडिगामा प्रथम यूरोपीय व्यक्ति था जो अफ्रीका महाद्वीप का चक्कर लगाते हुए Cope of good Hope को पार करते हुए 90 दिन की यात्रा के बाद 17 मई 1498 को एक गुजराती पथ प्रदर्शन अब्दुल मनीक का पीछा करते हुए कालीकट वन्दरगाह पर पहुंचा यंहा के शासक जमोरिन ने वास्कोडिगामा का स्वागत किया यहां पर कुछ महीने रहकर वास्कोडिगामा ढेर सारी जड़ी बूटिया और मसाले लेकर वापस पुर्तगाल लौटा यह सामान वास्कोडिगामा की यात्रा के कुल खर्च को निकाल कर 60 गुना ज्यादा दामोपर बिका और अधिक मुनाफा कमाया। जिससे अन्य पुर्त गाली व्यापारियों को भी प्रोत्साहन मिला।

- पुर्तगालियों की इस यात्रा का अरब व्यापारियों ने विरोध किया जिसमें कोरोण्डल के चेट्टिया समुदाय के ''चूलिया मुसलमान सर्व प्रथम थे और यही से अरब व्यापारियों एवं पुर्वगालियों के बीच खराब सम्बन्धों की शुरूआत होती हैं।
- 9 मार्च 1500 ई.वी. में दूसरा पुर्तगाली नाविक पेडो अलबरेज क्रेबॉल भारत आया। वह अपने साथ तोपे बन्दूक एवं वारूद भी लाया। और उसने अरब व्यापारियों को मार सफाया कर दिया।
- यह विशेष महत्वपूर्ण तथ्य हैं कि भारत में बारूद बन्दूके तोपे का श्रैय पुर्तगालियों को हैं जब कि युद्ध में तोपो एवं बारूद का सर्व प्रथम व्यापक पैमाने पर प्रयोग बाबर ने पानीपत के युद्ध (21 अप्रेल 1526) इब्राहिम लोदी के विरूद किया।
- 1502 में बास्कोडिगामा पुन : भारत आया एवंम 1503 ई. वी. में भारत में कोचीन (केरल में) पहली पुर्तगाली व्यापारिक कोठी की स्थापना हुई तत्पश्चात 1505 में कन्नानोर में दूसरी कोठी की स्थापना हुई।

फ्रास्सिको डी अलमिड़ा (1505 से 1509) :

भारत में पहला पुतगाली गर्वनर फ्रास्सिको डी अलमिड़ा था जो अपने-तले पानी की नीति (ब्लू वाटर पोलिशी) के लिए जाना जाता था। वस्तुतः नीले पानी की नीति समुन्द्र पर अपना सैन्य प्रभुत्व बनाये रखने से सम्बन्धित हैं। अलमिड़ा पहला पुर्तगाली था जिसने भारतीयों की नौ सैनिक कमजोरी को पहचाना।

अलफांसों-डी-अलवुकर्क- (1509 से 1515) :

भारत में दूसरा पुर्तगाली वायसराय अलफासों-डी-अलवुकर्क था जो भारत में पुर्तगाली साम्राज्य का संस्थापक था। अलबुकर्क ने 1510 में बीजापुर के सुल्तान यूसुफ आदिल शाह से गोआ छीन लिया। अलवुकर्क ने भारतीयों की पुर्तगालियों को भारतीय सेना में भर्ती होना शुरू किया और दूसरी और उसने पुर्तगालियों पुरूषों को भारतीय महिलाओं से विवाह करने के लिए प्रोत्साहित किया 1515 में अलवुकर्क की मृत्यु हो गयी। उसे गोवा में दफनाया गया।

भारत की प्रथम कैथोलिक चर्च गोवा में बनी हैं जहां पर अलवुकर्क को दफनाया गया।

- अगले क्रम में भारत आने वाले पुर्तगाली गर्वनर के रूप में नीनो द कुन्हे (1529-38) का उल्लेख मिलता है। मुगल दरबार में आया था। कुन्हे का उल्लेख बाबर ने अपनी आत्मकथा तुजुक-ए-बाबरी अनबर के नाम से दिया है। नीनो द कुन्हें ने हुंमायू का एक भंयकर जहरीला फौड़ा ठीक किया है।
- नीनो द कुन्हें ने 1530 में कोचीन के स्थापन पर गोवा को भारत में पुर्तगाली सामाज्य की राजधानी को घोषित किया।
- कुन्हे के समय ही मद्रास के निकट सैनयोमे, बंगाल में हुगली, चढगांव आदि स्थानों पर पुर्तगालीय कोठिया स्थापित हुई बाद में पुर्तगालियों ने मलक्का, आम्बोयाना (इण्डोनेशिया, सीलोन (श्री लंका) आदि स्थानों पर भी अपनी फैक्टरीया स्थापित की।
- 1572 ई. में अकबर की गुजरात विजय के समय अकबर की मुलाकात पुर्तगाली गर्वनर एण्टोनियों केब्रांल से हुई। जिसके साथ अकबर ने हज यात्रियों की सुरक्षा के सम्बन्ध में एक सन्धि की
- 1575 में अकबर के दरवार में आने वाला जेसुइटमिशन फतेहपुर सीकरी में आया इस मिशन में मुख्यत: तीन लोग शामिल थे
  (i) रूडोल्फ एक्वानिवा
  (ii) एथोनी मासीरेट
  (iii) फ्रांसिस हेनरी क्वेज शामिल थे।
- फ्रासिस हेनरी क्वेज दिभाषीया था
- ऐन्थोनी ने अकबर को ईसाई धर्म की मूलभूत वातो से परिचित करवाया तथा मांसीरेट ने ही अकबर के काल का एक प्रभाणित इतिहासिक वृतांत किया। अकबर ने अपने पुत्र मुराद का शिक्षक नियुक्त किया ताकि मुराद पुर्तगाली भाषा सिखा सके।
- पुर्तगाली ही भारत में आलू तम्बाकू लाये।
- तम्बाकू की खेती पर जहांगीर ने प्रतिबन्ध लगाया।

डचो का आगमन :

भारत में आने वाला पहला डच यात्री हयूगो वांन लिसातन (1583-89) में गोवा में आया। भारत की समृद्धि के विषय में होलेन्ड् लौटकर एक पुस्तक लिखी। यह पुस्तक 1595 में प्रकाशित हुई जिसने भारत की समृद्धि के सन्दर्भ में पूरे यूरोप में सनसनी फैला दी। इसी पुस्तक में लिसातन ने भारत को golden Bird कहा।

- लिसातन की पुस्तक से उत्साहित होकर डचों की पूर्वी देशों की और व्यक्तिगत यात्रा शुरू हुई।
  पहला डच व्यापारी कार्नोलियन हाडटमैन (1595-96) सुमात्रा पहुंचा।
  भारत आगमन के क्रम में डचो की पहली व्यापारिक कोठी 1605 में मछलीपट्टनम (मसूली पत्तनत (आन्ध्र प्रदेश)) में डच नौसेना नायक ''वॉन डेर हेग'' ने बनायी।
- अगली डच कोठी 1610 में पूलीकर (मद्रास) में स्थापित हुई
- अगली डच कोठी 1617 में सूरत में वॉन रवेस्तेयन ने बनायी। सूरत सबसे अधिक लाभ कमाने वाला व्यापारिक केन्द्र था।
- पूर्वी भारत के सन्दर्भ में डचो की पहली व्यापारिक कोठी 1627 ई.में बगाल में पिपली में स्थापित हुई। इसके तुरन्त बाद बालासोर (उड़ीसा) तत्पश्चात नागपत्तनम (तमिलनाडु) में डच व्यापारिक कोठिया स्थापित हुई परन्तु बंगाल में डचो का सुचार रूप से कार्य 1653 में स्थापित हुआ। जब 1653 में हुगली क निकट चिनसुरा में अगली डच कोठी 'गुस्तावुल फोर्ट'' का निर्माण हुआ 1663 में डचो ने पुर्तगालियों को प्रभाव हीन करते हुए कोचीन में भी अपनी महत्वपूर्ण व्यापारिक कोठी स्थापित की।

डच व्यापार का स्वरूप :

व्यापारिक उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए डचो ने अपनी फैक्टरीयां भारत एवं दक्षिण पूर्व एशिया दोनो जगह स्थापित की। चूकि दक्षिण पूर्वी एशिया में भारतीय वस्तों एवंनील की अत्यधिक मांग थी। अत: डचो ने भारत से सूती वस्त्र प्राप्त करके तथा उनके बदले दक्षिण पूर्व एशियाई द्वीपो से मसाले प्राप्त करके उनका निर्यात करके लाभ कमाया। इस प्रकार भारतीय सूत्री वस्तों को निर्यात की प्रमुख मद बनाने का श्रेय डचो को है। साथ ही साथ डचो की मुख्य रूचि इण्डोनेशिया जॉवा सुमात्रा द्वीपो में थी क्यों कि यूरोप में मसालो की वहुत मांग थी।

Curtel Systam :

यह प्रणाली वस्तुत: बुनकरो के शोषण पर आधारित व्यवस्था थी। जिसके तहत डच व्यापारी, भारतीय वस्तो को प्राप्त करने के लिए' भारतीय मध्यस्थ व्यापारियों से सम्पर्क करते थे और उन्हें एक मुक्त अग्रिम रकम का भुगतान कर देते थे। यह मध्यस्थ व्यापारी मनमाने तरीके से बुनकरो पर अत्याचार करके उन पर बहुत कम दामो पर वस्त्र तैयार करवाते थे। इस प्रकार डचो एवं भारतीय मध्यस्थ व्यापारियो के आपस में मिलकर बुनकर के

शोषण पर आधारित इस व्यवस्था को Curtel Systam के नाम से जाना गया।

इसके अतरिक्त डचो ने सूती एवंम रेशमी वस्तों को प्राप्त करने के लिए सीधे वुनकरो से सम्पक किया। डचो ने स्वंयम काशिमवाजार में 30 हजार बुनकरो की सहायता से 1650 ई. एक रेशम चक्रीय उद्योग (कारखाना) लगाया तथा बुनकरो को वेतन के आधार पर नियुक्त प्रदान की गयी इस प्रकार भारत में पहली बार औद्योगिक वेतन भोगी नियुक्त किऐ गये। डचो ने भारत से सूती वस्त्र, नील कच्चा, रेशम, शोरा एवम अफीम का निर्यात किया।

भारत में अग्रेजो का आगमन :

31 दिसम्बर 1600 में इग्लैण्ड की महारानी एलिजावेथ ने कुछ ब्रिटिश व्यापारीयो के सम्मिलित कोष की एक कम्पनी बनायी और उसे पूर्वी देशों के साथ 15 वर्षो के लिए एकाधिकार सोपा। उस कम्पनी का प्रारम्भिक नाम था मर्चेन्ट ऑफ एडवर्स जो बाद में The गर्वनर एन्ड कम्पनी ऑफ मर्चेन्ट ऑफ लदन ट्रेडिग इन दू ईस्ट कर दिया गया।

1603 में एलिजावेथ की मृत्यु हो गयी। उनका उत्तराधिकारी जेम्स प्रथम हुआ।

- 1603 में केप्टन होकिंस, ब्रिट्रेन के शासक जेम्स का अकबर के नाम फारसी में लिखा पत्र FRIEND लिखा पत्र लेकर HECTOR नामक जहाज से सूरत वन्दरगाह पर आया उसक साथ थॉमस कोर्यात, केप्टन वेस्ट आये।
- केप्टन हॉकिस तुर्की एवं फारसी भाषाओं का अच्छा जानकार था। हॉकिंस ने जहांगीर से फारसी भाषा में बात की जहांगीर ने हॉकिस को 400 का मनसव एवं इग्लिश खान की उपाधि प्रदान की। हॉकिन्स ने भारत के बारे में लिखा कि भारत में चांदी आती ही आती है जाती कभी नहीं लेकिन केप्टन हॉकिंस जहांगीर से किसी भी प्रकार की व्यापारिक सुविधाये प्राप्त कर पाने में असफल रहा।
- यद्यपि 1608 में केप्टन वैस्ट निकोलस विधिंगटन ने सूरत में भारत की पहली विट्रिश व्यापारिक काठी की स्थापना कर दी थी जबकि 1613 में जहांगीर द्वारा सूरत में अग्रेजो को स्थायी रूप से वसने की राजक्षा तथा कुछ व्यापारिक सुविध ाये प्राप्त हुई।
- जहांगीर के दरबार में आने वाले अगले ब्रिटिश प्रतिनिधियों में पॉल कैनिग 1612 विलियम एडवर्ड 1613-15 में आये।
- जहांगीर के दरबार में आने वाला सर्वाधिक महत्वपूर्ण व्यापारिक मिशन 18 सितम्बर 1615 को सर थोमसरो के नेतृत्व में सूरत पहुंचा। थॉमसरो, जेम्स प्रथमक पत्र Perfect लेकिर 10 जनवरी 1616 को जहांगीर के दरबार आगरा में पहुचां थोमस को जहांगीर से कुछ व्यापारिक सुविधाये पाने में सफल रहा। तथा जहांगीर के साथ दक्षिण भारत के भ्रमण पर भी गया।
- थॉमस को 10 जनवरी 1616 से 17 फरवरी 1619 तक मुगल दरवार में रहा लगभग 2 वर्ष 11 महीने 18 दिन रहा।

अग्रेजो की व्यापारिक कोठियों के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण विवरण :

- 1608 सूरत भारत में अग्रेजो की प्रथम व्यापारिक कोठे केप्टन वेस्ट ने बनायी।
- भारत में दूसरी ब्रिटिश कोठी 1611 में मछली पट्नम में पुरी में कोठी (दक्षिण भारत में पहली व्यापारिक कोठी परन्तु जज्दी ही दक्षिण भारत में विट्रिश व्यापारिक गवविधियो का केन्द्र मद्रास हो गया जिसे FRANCIS DEY ने चन्द्रगिर के राजा से पट्टे पर लिया था। मद्रास में FORT SAINT GEORGE की स्थापना हुई।
- मद्रास का संस्थापक FANICIS DEY था
- 1633 में भारत में तीसरी विट्रिश कोठी की स्थापना उड़ीसा में हुई (पूर्वी भारत के सन्दर्भ में प्रथम कोठी।
- 1651 अगली विट्रिश कोठी की स्थापना बंगाल हुगली में ब्रिज मैन ने की''
- 1661 में स्पेन ने इग्लैण्ड के शाशक चार्ल्स द्वितीय को पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन से विवाह करने पर उसे बम्बई दहेज में दे दिया। और चार्ल्स द्वितीय ने मात्र 10 पोंड वार्षिक किराये पर ईस्ट इंडिया कम्पनी को सोप दिया।
- 1698 में जाब चार्नाक ने बंगाल के सूवेदार अजीमुरशान से 1200 रु में सुतीनाता कालिकाता एवम गोविन्दपुरी की जमींदारी प्राप्त की और यहां पर एक विट्रिश कोठी FORT Willem की स्थापना हुई। Fort wiliem का Sir चार्ल्स आयर हुआ।
- 1717 में मुगल बादशाह फर्रूखसियर के दरबार में एक ब्रिटिश प्रतिनिधि मण्डल आया। जिसमें मुख्यत: तीन लोग शामिल थे
  1. नेतृत्व करता जॉन सरमन
  2. डा. हैमिल्टन
  3. द्विभाषीया ख्वाजा सेर्दूद
- डा. हैमिल्टन ने फर्रूखासियर की एक गंभीर बीमारी ठीक कर दी। अत: फर्रूखासियर ने प्रसन्न होकर एक फरमान जारी किया जिसके तहत:

1. रूपये 3000 वार्षिक भुगतान के बदले ईस्ट इण्डिया कम्पनी को समस्त भारतीय बन्दरगाहों से कर मुक्त व्यापार प्रदान हो गया।
2. अग्रेजों के कलकत्ता के आस-पास जमीन लेने एवं स्थायी रूप से बसने की अनुमति मिल गई।
3. ईस्ट इन्डिया कम्पनी को अपने सिक्के ढालने एवं उन्है चलाने की अनुमति भी प्रदान हो गयी।

- इतिहासकार ओर्म ने इसे Magnacurata of Compeny (कम्पनी विशेष अधिकार पत्र अथवा सुनहरा परमान कहा है।

भारत में फ्रांसीसियो का आगमन :

फ्रांसीसी ईस्ट इंन्डिया कम्पनी जिस का मूल नाम कैम्पेग्ने डेस इंडेस ओरिएटलस था की स्थापना 1664 में फ्रांस के शाशक लुई 14वां के एक प्रधानमंत्री कोल्वर्ट के व्यक्ति गत प्रयासो से हुई। भारत के सन्दर्भ में पहली, फ्रांसीसी कोठी की स्थापना 1668 में सूरत में फ्रैंक कैरो ने की।

- भारत में दूसरी फ्रासीसी कोठी की स्थापना 1669 में मछलीपट्नम में मैर्कारा ने की (द. भारत के सन्दर्भ में पहली फ्रांसीसी कोठी थी)।
- अगली फ्रांसीसी कोठी की स्थापना 1673 में पांडिचेरी में फ्रैको मार्टिन ने की और उसी को पांडिचेरी का जन्मदाता कहते है
- अगली कोठी बंगाल में चंन्दनगर में (1674) में बनी।

EduBull.com